प्रेम

मैंनूं लोकी कमली आखदे, कमली वाला तूं।।

तेरे प्रेम ने कमली कीता, भुल्ली पढ़न – पढ़ावन गीता।
जग तेरे बाझों अंधेर है , कर उजियारा तूं , मैंनूं ... ...

जद फड़ लया तेरा पल्ला, दुनियां भाणे कम अवल्ला।
सुन कूक नमानी दीन दी, दीन दयाला तूं ,मैंनूं ... ...

पाके प्रेम दीयां तारां, बैठी तू ही तू पुकारां।
मेरे हिरदे अंदर फिर रही, दम – दम मालां तूं , मैंनूं ... ...

ऐ कहिन्दा " दासनदास " मेरे दिल विच ऐही आसा।
मैनूं भरके दाता बख़्श दे,प्रेम प्याला तूं , मैंनूं ... ...

तर्ज़ – तू जाके बनां विच की लैना ... ...

सारे जग दीयां खुशियाँ इक पासे, मेरा प्रीतम प्यारा इक पासे।
की दसां दिल विच बसदा ऐ, अखियां दा सितारा इक पासे।। टेक।।

ऐ प्रीत छुपायां छुप दी ना, चुप कर जावां, गल चुप दी ना।
कदी रोवां आवन मुड़ हासे, ओदा प्रेम इशारा इक पासे, सारे ... ...

मेरे दिल विच आसन उसदा ए,मैं हथ जोड़ां ओ रुस दा ए।
लोकां नूं उल्टी गल भासे, इस जग तों किनारा इक पासे, सारे ... ...

मैं उसदी ते ओ मेरा है, उस प्रीतम बिन घोर अंधेरा है।
कई चन ते सूरज इक पासे, ओहदा इक चमकारा इक पासे, सारे ... ...

कहे " दास " मैं उस तों वारीं हां, इस दर ते सदा भिख्यारी हां।
कदी ख़ैर चा पासी विच कासे, बईऐ मल का द्वारा इक पासे, सारे ... ...

तर्ज़ – चंगी प्रीत गुरां नाल लानी हुंदी ऐ ... ...

सोहणे मुखड़े नूं देख – देख जी रज दा।
दाता बख़्शनहार मेरे ऐब कजदा।। टेक।।

ऐ तां प्रीत चरोकी , जेड़ी जान दे नहीं लोकी ,
साडी रमज़ अनोखी, नाता नहीं अजदा , सोहणे ... ...

तेरा देख्या नज़ारा , आया प्रेम दा हुलारा ,
झगड़ा मिट गया सारा, ओसे दिन लोक – लजदा ,सोहणे ... ...

प्रेम नाल जिस डिट्ठा, लगा दीद तेरा मिट्ठा ,
फिर ओ जग दे विकारां ताईं, जावे तजदा , सोहणे ... ...

गया दिल तुसां वल, लीता तुसां इसनूं छल,
पावे चैन नहीं पल, पिछे तेरे भजदा, सोहणे ... ...

" दासनदास " पुकारे वसो दिल विच प्यारे,
बाझों तेरे नज़ारे, जीना नहीं चजदा, सोहणे ... ...

तर्ज़ – तेरी बंसी ने मन मोह लिया ... ...

बातों – बातों में दिल खो लिया, मेरा मन मोह लिया,
मेरे प्रीतमां हाँ मेरे प्रीतमां ।। टेक।।

चंद जैसे मुखड़े चों मिट्ठा – मिट्ठा बोल के।
प्रेम दा तराजू तुसां दस दित्ता तोल के।।
दिल दित्ता तोल के, हां बातों ... ...

प्रेम वाली डोर पाके दिल ताईं खिच्चेया।
तेरे मिट्ठे वचनां दा जाल ऐसा विच्छेया।।
जाल ऐसा विच्छेया, हां बातों ... ...

दिल ताईं भुख मुख देखां कदों आपदा।
प्राणां तों प्यारा, तेरे जिआ ना कोई जापदा।।
जिआ ना कोई जापदा, हां बातों ... ...

आजा इक वारी चित्त चोर " दासनदास " दे ।
तेरे बाझों ज़िंदगी दे दिन थोड़े भासदे।।
दिन थोड़े भासदे, हां बातों ... ...

तर्ज़ – मेरी बिगड़ी बना दे ... ...

मैंनू सब तों प्यारा तूं क्यों लगदा।
नाले सब तों न्यारा तूं क्यों लगदा।। टेक।।

तेरी इक – इक झलक तों मैं सदके गई।
मैं निमाणी नूं आकर के मिल तां सही।।
मैंनूं दिसदा सहारा तूं ही जग दा, मैंनू ... ...

मेरे दिल दीयां आसां ना तोड़ीं प्रभु।
सुंदर मुखड़ा तां मैं वल मोड़ी प्रभु।।
पता प्रभु जी तैनूं सारा रग –रगदा, मैंनू ... ...

तेरे बाझों सुने कौन फ़रियाद नूं।
कौन आवेगा दुखिया दी इमदाद नूं।।
तेरे बाझों अंधेरा है क्यो लगदा, मैंनू ... ...

तेरे बाझों न दरदी नज़र आंवदा।
" दास " दुखिये नूं कुछ भी नहीं भावंदा।।
अते जीवन नकारा है क्यो लगदा, मैंनू ... ...

तर्ज़ – कर जोड़ प्रथम प्रणाम करूं ... ...

ऐ सर है अमानत सत्गुरु दी, थां थां ते झुकाया नहीं जांदा।
ए दिल भी अमानत सत्गुरु दी,थां थां ते लगाया नहीं जांदा।।

असी चीर के राह नूं जावांगे, अतः सत्गुरु दर्शन पावांगे।
असी अपना पीर मनावांगे, साथों जग नूं मनाया नहीं जांदा।।

असी सत्गुरु प्रेम दिवाने हां, अते सोहणी शमां दे परवाने हां।
असी लोकां कोलों बेगाने हां, साथों भेद छुपाया नहीं जांदा।।

सानूं दुनिया दा है डर केहड़ा, साड़ा सत्गुरु बाझों दर केहड़ा।
दर सत्गुरु जी दे आ करके, पिछे क़दम उठाया नहीं जांदा।।

असी सत्गुरु जी दे " दास " होये, साडा चरण कमल विच वास होये।
असी दुनिया कोलों निराश होये, साथों प्रेम छुपाया नहीं जांदा।।

तर्ज़ – रब्ब मिलदा ग़रीबी दावे ... ...

तेरे प्रेम ने कमली कीता दुनियां सारी माही वे।
सदक़े जांवा सौ – सौ वारी, मिल इक वारी माही वे ।। टेक।।

जिसने पीता प्रेम प्याला, देवां की मैं उसदा हाला।
उसदा वखरा जग तों चाला, खेल न्यारी माही वे।।

जो कोई तेरा पानी भरदा, ओ ताँ हो गया ऐसे दर दा।
तेरे उसदे विच जो परदा, फिरी बुहारी माही वे।।

दुनियाँ कहंदी उसनूं पगला, विच – विच कहंदे भगत है बगुला।
झगड़ा मुक गया उसदा सगला, चिंता टारी माही वे।।

एधरों तेरा प्रेम सतावे, दुनियाँ तानेयाँ नाल डरावे।
रो – रो उठदे दिल तों हावे, रात गुज़ारी माही वे।।

तेरे प्रेम दी अजब कहानी, कह कर दस्से कौन जुबानी।
" दास " दिल ते हुई निशानी, जख़्म होए कारी माही वे।।

तर्ज़ – ज़हे किस्मत ... .

अरे लोगों तुम्हें क्या है या वो जाने या मैं जानूं।। टेक।।

वोह मेरी बग़ल में रहता, मैं इसके नाज़ सब सहता ,
वोह दो बातें मुझे कहता, या वो जाने या मैं जानूं।

मैं उसको देखकर खुश हूँ , मुझे वोह प्राण से प्यारा,
मैं उसकी लहर में बहता, या वो जाने या मैं जानूं।

मुझे कुछ प्यार है उससे, किया इक़रार है उससे,
जो हरदम याद है रहता, या वो जाने या मैं जानूं।

लगाकर ठोकरें मुझको, सता लो जितना जी चाहे,
खुशी से " दास " है कहता, या वो जाने या मैं जानूं।

तर्ज़ – सानूं सांवरे दी बंसी दा चा उधौ वे ... ...

तेरे मुख दे नज़ारे सानूं पट सुटया।
करके प्रेम दे इशारे सानू पट सुटया।। टेक।।

डिठा तेरा प्रेम अनोखा, आख़िर चलयों देकर धोखा।
साडे तीर कलेजे मारे, सानूं ... ...

जेहड़े हस के प्रेम लगाये, ओ फिर क्यों न तोड़ निभाये।
आ गये दुःख असां सिर भारे, सानूं ... ...

खिड़या – मुखड़ा फुल गुलाब, दिल नूं खिच लै जाये शताब।
ऐसे दे के प्रेम हुलारे, सानूं ... ...

मुख तों बोलो मेरे दयाल, आसी कदों तक छेंवां साल।
कीते नाल ग़रीबां लारे, सानूं ... ...

बैठा तेरी करां कहानी, मेरे भोले – भाले जानी।
तेरा " दासन " पुकारे, सानूं ... ...

तर्ज़ – जिन्हा प्रीत सज्जन संग ... ...

चंगी प्रीति गुरां दे नाल लानी हुंदी ए ।
प्रीति लायिए ते तोड़ निभानी हुंदी ए ।। टेक।।

प्रीतिवान होया भाई मंझ प्यारेयो ,
कीता मूल ना गुरां ताईं रंज प्यारेयो।
लोकलाज विच प्रेम दे भुलानी हुंदी ए, चंगी प्रीति ... ...

पुछो जोगासिंह ताईं लावां छड आया सी ,
ए पर गुरां वाला प्रेम न दिलों भुलाया सी।
इज़्ज़त लोक ते परलोक विच पाणी हुंदी ए, चंगी प्रीति ... ...

होया भाई हरिपाल, कीता गुरां नूं दयाल,
गुरु प्रेम विच आके कर छड़या कमाल।
नाले पुत्री ते भैण दी कुर्बानी हुंदी ए, चंगी प्रीति ... ...

ऐसी प्रेमिया दी चाली, होके गुरां दा सवाली ,
जाने मैं हां गुरां दा, अते गुरु मेरे वाली।
सेवा दिल नाल गुरां दी कमानी हुंदी ए, चंगी प्रीति ... ...

" दासनदास " जो गुरां नाल प्रेम पावंदा,
ताने देवंदा है जग जेहड़ा सह जावंदा।।
गुरु घर विच ओस दी कहानी हुंदी ए, चंगी प्रीति ... ...

दिल गया, दिल गया, हाय दिल गया वो दिल गया।। टेक।।

दिल के पीछे पड़ चुके थे आख़िर दिल ले गये।
दिल के बदले मुझको कुछ सर्द आहें दे गये।।
दिल लगाने का ये फल आख़िर में हमको मिल गया, दिल ... ...

लोग कहते है इशारों से तुझे क्या हो गया।
ढूंढते फिरते हो किसको क्या तुम्हारा खो गया।।
किसके पीछे आँसुओ का फूल प्यारा खिल गया, दिल ... ...

ना वो बातें ना वो रातें ना वो तेरा रंग है।
बैठने उठने का तेरे और ही अब ढंग है।।
देखने वालों का तुझको कालजा भी हिल गया, दिल ... ...

प्रेम के धोखे को ये दिल कुछ अगर तो जानता।
याद में उनकी अब तक ख़ाक फिरता छानता।।
ऐसे धोखे में फंसकर "दास" क्या कुछ मिल गया, दिल ... ...

तर्ज़ – "कव्वाली" – मेरे ईश्वर मेरे दाता ... ...

भुलाता हूं बड़ा उनको, मगर वो याद आते हैं।
वो मेरे दिल के मालिक हैं, अनोखे उनके नाते हैं।। टेक।।

जिसे मैंने सुना था प्रेम अब वो बन गया जादू।
हंस कर बातों – बातों में , जीया मोरा चुराते हैं, भुलाता हूं ... ...

अरे लोगों तुम्हें क्या है, न समझाओ मुझे इतना।
मैं उनका और वो मेरे, सदा इस दिल को भाते हैं, भुलाता हूं ... ...

अगर कुछ हो सके तुमसे, तो इतना जा कहो उनसे।
तुम्हें कोई याद करता है, भला क्या कह सुनाते हैं, भुलाता हूं ... ...

कहो यह हाल विरहन का, मिलो अब आन कर प्रीतम।
जुदाई में तड़पते "दास" के, अब प्राण जाते हैं, भुलाता हूं ... ...

विरह

शेर

इक दुख सानूं रोज़ सतावे जेहड़ी याद तुसां दी आंदी।
उट्ठे दिलां तो दर्द निराला पेश मूल ना जांदी।।
फड़ – फड़ नब्ज़ां वैध बेचारा नाल इशारे दसदा ।।
मालुम हुंदा इसदे अंदर भूत होय ज़्यों वसदा।।

तर्ज़ – ओ दूर जाने वाले ... ...

क्या पूछते हो लोगों दर्दों भरी कहानी।
दिल ले गया है मोहन कुछ दे गया निशानी।। टेक।।

चलती दफ़ा जो पूछा कब तक मिलोगे प्रीतम।
कुछ कर गये इशारा बोले नहीं ज़बानी, क्या ... ...

सब पूछते हो यहीं आहें क्यों भर रहे हो।
आंखों को क्या मर्ज़ है बहता रहे जो पानी, क्या ... ...

दिल पास न हो जिसके दिलदार न हो सुनता।
हुए तो दूर क्यों कर उसकी मर्ज़ पुरानी, क्या ... ...

दिल दे के ले लिया है, धोखा सा ''दास'' तूने।
ना जाने दूर होगी, कब तक तेरी हैरानी, क्या ... ...

तर्ज़ – क़व्वाली

सखी उस शाम का विरह, मुझे इतना सताता है।
न इक पल चैन है मन में, कलेजा मुँह को आता है।।

न दिल समझाया समझे है, पड़ा है प्रेम का जादू।
हटकने पर भी यह उसकी तरफ, झट दौड़ जाता है।।

पता अब तक नहीं मिलता, किधर चित्त चोर है मेरा।
वो आकर चुपके से तिरछी, नज़र ऐसी चलाता है।।

खड़ा जब सामने आकर, चाहा कुछ कहने को मैंने।
हंस कर फेर ली आंखें, जिया मेरा चुराता है।।

ग़ज़ब है श्याम सुंदर से, मुहब्बत का लगाना ही।
वो ''दासनदास'' इस दिल को, जो हरदम ही जलाता है।।